पद ८३

(राग: झिंजोटी - ताल: दादरा)

नाहीं नाहीं हें जग, पूर्ण ब्रह्म रे। निरालंबी कैचा हा भ्रम बंध रे।।धु.।। आहे भासे जें प्रिय पंचभूत रे। भूतरूपें नटतो अवधूत रे।।१।। बोध मार्ताण्ड हा संतां गोड रे। आहे आहे सुदैव लाभ जोड रे।।२।।